ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 16 अंक 20 | कुल पृष्ठ-8 | 21 से 27 जनवरी, 2021 | दयानन्दाब्द 197 | सृष्टि सम्वत् 1960853121 | सम्वत् 2077 | मा. कृ.-07

दया, दान और परोपकार आदि मानवीय गुणों को संजोए हुए भारतीय संस्कृति विश्व में सबसे महानतम

– स्वामी आर्यवेश

भारत विकास परिषद् के तत्वावधान में 25 दिव्यांगजनों को स्वामी आर्यवेश जी के कर-कमलों से वितरित किये गये निःशुल्क कृत्रिम अंग

राष्ट्रीयता व सामाजिक सरोकारों का वहन करते हुए भारत विकास परिषद् के तत्वावधान में दिनांक 18 जनवरी, 2021 को बहल की नई धर्मशाला में कृत्रिम अंग वितरण समारोह का भव्य आयोजन किया गया। इस आयोजन में 25 दिव्यांगजनों को कृत्रिम अंग निःशुल्क वितरित किये गये। इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के यशस्वी प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, विशेष रूप से मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित किये गये थे। उनके अतिरिक्त विशिष्ट अतिथि श्री राज कुमार मक्कड़, स्थानीय शाखा के अध्यक्ष श्री अमरजीत चौधरी, संरक्षक डॉ. एन.पी. गौड़, पूर्व जिला प्रमुख श्री राजवीर फरटिया, श्री जियालाल बंसल, श्री हुकुमचन्द गोयल, श्री हरिओम भारद्वाज, महन्त केशवनाथ, महन्त विकास गिरी, श्री सुशील केडिया, डॉ. वीरेन्द्र श्योराण, श्री राकेश बंसल, श्रीमती नीतू केडिया, श्री महेन्द्र सालू, श्री सज्जन साबू, श्री मनीष वालिया सहित अनेकों गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता भारत विकास परिषद् के प्रदेशाध्यक्ष श्री महिपाल यादव ने की।

ज्ञातव्य हो कि भारत विकास परिषद् ने पहले चयनित दिव्यांगजनों के माप लिये थे और उसके अनुसार कृत्रिम अंग बनवाकर वितरित किये गये। सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी के कर-कमलों से 25 दिव्यांगजनों को पाँव, हाथ, ट्राई साइकिल, व्हीलचेयर, ईयर मशीन आदि प्रदान कराये गये।

इस अवसर पर अपने उद्बोधन में स्वामी आर्यवेश जी ने भारतीय संस्कृति के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि दया, दान और परोपकार आदि उच्च मानवीय मूल्यों से गुंठित भारतीय संस्कृति विश्व में सबसे महानतम संस्कृति है। उन्होंने कहा कि विश्व गुरु महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का आर्य समाज की स्थापना के पीछे मुख्य उद्देश्य शेष पृष्ठ 5 पर

कुरीतियों का कुचक्र तोड़ना ही होगा

– पं. उम्मेद सिंह विशारद

महर्षि दयानंद सरस्वती जी अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश के 11वें समुल्लास की अनुभूमिका में लिखते हैं कि जब तक इस मनुष्य जाति में परस्पर मिथ्या मत–मतान्तर का विरुद्धवाद न छूटेगा तब तक अन्यों को आनंद न होगा। यदि हम मनुष्य और विशेष विद्वतजन ईर्ष्या, द्वेष छोड़ सत्यासत्य का निर्णय करके सत्य का ग्रहण और असत्य का त्याग करना चाहें तो हमारे लिए यह बात असाध्य नहीं है।

यह निश्चय है कि इन विद्वानों के विरोध ही ने सबको विरोध जाल में फंसा रखा है। यदि यह लोग अपने प्रयोजन में न फंसकर सबके प्रयोजन को सिद्ध करना चाहें तो अभी ऐक्यमत हो जायें। इसके होने की युक्ति इसकी पूर्ति में लिखेंगे सर्वशक्तिमान् परमात्मा एकमत में प्रवृत्त होने का उत्साह सब मनुष्यों की आत्माओं में प्रकाशित करें।

ध्यानाकर्षण – इस लेख में मैंने केवल सामाजिक मान्यताओं व दैनिक दिनचर्या में जिन–जिन मान्यताओं से समाज को हानि हो रही है उन–उन का संकेत मात्र उल्लेख किया है, जिससे अंधविश्वासों की परंपरा बनी रहती है। उन–उन मान्यताओं पर विचार करके समाज में व्याप्त रूढ़ियों को हटाने में अपना योगदान देने का कष्ट करें। कुप्रथाएं और परंपराएं कोई ईश्वर का आदेश नहीं होती, ये सभी सुख–सुविधा तथा सुव्यवस्था के लिए समाज द्वारा बनाई जाती हैं। यदि हम सड़ी– गली, पुरानी रूढ़ियों को हानि उठाकर भी प्राचीनता के लोभ में अपनाते रहेंगे तो हम जमाने से पीछे रह जाएंगे। कुप्रथाओं और कुपरंपराओं को हर हाल में बदलना ही होगा समय का यही तकाजा है।

भ्रांतियां हटाए कुरीतियां मिटाएं – अपने देश की अवनति में वैचारिक भ्रान्तियों की सबसे अधिक भूमिका रही है। महाभारतकाल के बाद अंधविश्वासों की मान्यताओं के कारण लंबे समय तक देश गुलामी की जंजीरों में जकड़ा रहा है और आज भी कायम है। जो देश कभी अपने स्वतंत्र प्रखर वैदिक मान्यताओं एवं दूरदर्शी चिंतन के कारण अध्यात्म तत्व दर्शन का अन्वेषक माना जाता था, वही धार्मिक, सामाजिक मूढ़ मान्यताओं तथा कुपरंपराओं का केंद्र बन गया है। आज रूढ़ि मान्यताओं का रुप बदल रहा है। आर्य समाज व अन्य समाज सुधारक विचारधाराओं की संस्थाओं व अनेक मत मतान्तरों के नेतृत्व को आगे आकर सत्य वैचारिक वैदिक मान्यताओं का प्रचार करना होगा।

प्रथा परंपराएं सोच समझकर अपनाएं – जन्म से लेकर मृत्यु तक व्यक्ति अपने समाज, परिवार और कुल की निर्धारित परंपराओं का पालन करता है। प्रचलित परंपराओं में कई तो ऐसी हैं जिनकी किसी काल में कोई उपयोगिता रही हो, पर आज अनावश्यक ही नहीं हो गई है, अपितु कलंक बन गई है। उनको हटाना आवश्यक हो गया है।

हमारी अविवेकीय विचारशीलता ही कुरीतियां फैलाती है – मान्यताओं और प्रथा परंपराओं के संबंध में अधिकांश लोग अन्य परंपराओं के शिकार होते हैं और लकीर के फकीर बने रहते हैं। ऐसे पूर्वाग्रह उन्होंने अपने समीपवर्ती लोगों से सीखे होते हैं और अन्य परंपराओं को गले लगाकर रखते हैं। इसलिए आवश्यकता है आर्षज्ञान प्राप्त करके प्रचलित कुरीतियां मिटाने की।

अभिशाप जैसे प्रमुख कुप्रचलन – हमारी समाज व्यवस्था में चार मौलिक दोष हैं। 1. वंश के आधार पर ऊँच–नीच की मान्यता, 2. वेश धारण करने भर से अज्ञानी, वेद विहीन को संत मान लेना, 3. कन्या और पुत्र में भेदभाव करना, 4. विवाह में कन्या पक्ष का शोषण आदि। इन कुरीतियों के रहते हम सभ्य समाज के सदस्य नहीं कहला सकते हैं।

दिशा धारा मोड़नी ही पड़ेगी – गंभीरतापूर्वक देखने और सोचने से ऐसा प्रतीत होता है कि समझदारी के ऊपर नासमझी सवार हो गई है। हम लाभ के स्थान पर हानि ही अर्जित कर रहे हैं।

परंपराओं में घुसी हुई अवांछनीयता – विज्ञान ने अपनी प्रामाणिकता स्वतंत्र चिंतन का सहारा लेकर की है। सत्य और वेद ज्ञान तथा सृष्टि क्रम को मानकर परंपराओं को माना जाए तो कई अंधविश्वास व परंपराएँ समाप्त हो सकती है।

विचित्र ये सामाजिक प्रचलन – क्या उचित है क्या अनुचित है इसका निर्धारण वेद ज्ञान व विज्ञान के आधार पर किया जा सकता है। अस्तु, उचित–अनुचित के बीच अंतर करते समय देशकाल एवं परिस्थिति के आधार पर उपयुक्त निर्धारण करना चाहिए।

प्रथा–परम्परायें सोच समझकर ही अपनाएं – प्रचलित परंपरा में कई ऐसी हैं जिनकी किसी काल में आवश्यकता रही हो, पर अब अनावश्यक हो गई हैं। ऐसी अनुचित परंपराओं को छोड़ना ही बुद्धिमत्ता है। छाती से चिपकी निरर्थक परंपराएं व प्रथाएं देश, काल और परिस्थिति के अनुसार बदल देनी चाहिए।

परंपरा नहीं औचित्य देखें – प्रचलनों, प्रथाओं, परंपराओं में यदि औचित्य का समावेश न हो तो वे अंधविश्वासों से जकड़ जाते हैं तथा अनगिनत प्रकार की समस्याओं को जन्म देकर अनेकों प्रकार से अपने को और समाज को क्षति पहुंचाते रहते हैं तथा विकास क्रम को अवरुद्ध करते रहते हैं।

विवेकहीन कुप्रचलन – परंपराएं अच्छी व बुरी लोगों के मन में बस जाती हैं तथा विचार भक्ति में इतनी गुंजाइश ही नहीं रहती कि उनके गुण दोषों पर विचार कर सकें, कई बार तो अनुपयुक्त समझते हुए भी कुप्रथाओं को लोग कार्यान्वित करते हुए अपना बड़प्पन समझते हैं और गलत परंपराओं को प्रश्रय देते रहते हैं।

मुहूर्त से बड़ा विवेक – शुभ व अशुभ मुहूर्त के लिए समाज में बड़ा अज्ञान फैला हुआ है और शुभ अशुभ के चक्कर में समाज कई बार बड़ी हानि कर लेता है। देश, काल, परिस्थिति तथा ऋतु अनुसार, स्वास्थ्यानुसार जो भी समय हो वही हमारे लिए शुभ होता है। शुभ–अशुभ प्रचलनों को नहीं औचित्य को मान्यता देनी चाहिए।

प्रत्येक पारिवारिक व सामाजिक उत्सवों के नाम पर दिखावा अवांछनीय है – समाज में विवाह समारोहों में अनावश्यक आडंबर किया जाता है। व्यर्थ प्रदर्शनों को बढ़ा–चढ़ाकर प्रस्तुत करना ही अपनी शान समझा जाता है। इसको रोकना होगा और व्यर्थ व्यय से जो धन बचेगा उसको अन्य रचनात्मक कार्यों में लगाना उपयुक्त है। सामाजिक कुरीतियां कैसे मिटे तथा उन्हें प्रचलनों की कसौटी पर कसें और अवांछनीय मूढ़ मान्यताओं को उखाड़ फेंके। बड़े परिवर्तन के लिए बड़े प्रयास करने पड़ेंगे।

यह दुष्प्रवृत्ति विरोधी आंदोलन चलाना ही चाहिए – हमें निम्न विषयों पर आंदोलन करना होगा जैसे 1. मांस व कटे हुए पशुओं के चमड़े का उपयोग, 2. नशेबाजी की बढ़ती प्रथा, 3. पशु बलि, 4. मृत्यु भोज, 5. ऊँच–नीच जाति को मानना, 6. नारी तिरस्कार, 7. बेईमानी, 8. दहेज प्रथा, 9. उत्सव में अपव्यय, 10. धार्मिक अंधविश्वास, 11. असभ्यता, 12. गुरुडम पूजा आदि–आदि। नव निर्माण की दिशा में उक्त सुधार आंदोलन महत्वपूर्ण है। आर्य समाज एवं अन्य सुधारवादी विचारक संगठनों को आगे आना पड़ेगा।

पूर्वाग्रह कुरीतियों पर अड़े रहना बुद्धिमत्ता नहीं है – मानव जगत में अधिकांश विचार शक्ति व्यर्थ की पूर्वाग्रह मान्यताओं पर चलती हैं, जिसमें आपस में विरोधाभास होता है। यह पूर्वाग्रह विचार कैसे उत्पन्न होते हैं। मेरी समझ से हम हिंदू, मुसलमान, ईसाई , जैन, सिख बौद्ध क्यों होते हैं, क्योंकि हमने उन–उन परिवारों में जन्म लिया होता है और उसकी मान्यताओं के संस्कार पैदा होते ही उस बालक पर डाल दिए जाते हैं तथा वह मनुष्य आजीवन उसी विचारों पर चलता है। एक प्रकार वह थोपे हुए मान्यता एवं विचार होते हैं। उसी को मनुष्य अपना स्वाभिमान समझता है तथा आपस में टकराव होता है और सभी अपने अपने पूर्वाग्रह विचारों को ही सत्य समझते हैं। विचार कीजिए इतिहास गवाह है इन पूर्वाग्रहों ने मानव समाज का भयंकर अहित किया हुआ है।

समाधान – ईश्वर द्वारा प्राणी मात्र के लिए अन्य पदार्थों के साथ–साथ वेदों का ज्ञान भी दिया गया है। वेदों का ज्ञान सर्वकालिक, सार्वभौमिक, सर्वहितकारी, सत्य धर्म, सृष्टि क्रमानुसार, विज्ञान के अनुसार सबके लिए समान रूप से है। बस यही सुख शांति का मार्ग है। यह एक ऐसी स्टेज है जहां पर सभी पूर्वाग्रह, अवैदिक विचार समाप्त होते हैं। यह नितांत सत्य है कि मानव जगत में संपूर्ण सुख शांति तभी प्राप्त हो सकेगी, जब संसार वैदिक धर्म के मार्ग पर चलेगा। मानव समाज में व्याप्त व्यर्थ की मान्यताएं तभी समाप्त होंगी जब मनुष्य मात्र ईश्वरीय वेद ज्ञान की शिक्षाओं पर चलेगा।

●

'योगेश्वर श्रीकृष्ण' पुस्तक अवश्य पढ़ें

– लेखक स्व. पं. चमूपति एम. ए.

'योगेश्वर श्रीकृष्ण' नामक पुस्तक पृष्ठ संख्या–256, अच्छे जिल्द एवं कागज में छपकर तैयार है। जिसकी कीमत 100/: रुपये है, जिस पर 25 प्रतिशत छूट उपलब्ध है। परन्तु भेजने में डाक व्यय खर्च होता है। अतः एक पुस्तक मंगाने के लिए डाक व्यय सहित 100/– रुपये भेजकर मंगा सकते हैं।

प्राप्ति स्थान – सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, ''महर्षि दयानन्द भवन'' 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–2

दूरभाष :–011–23274771, 23260985

गरिमामय गणतंत्र हमारा

& Mkl- jke cgknij ^0;fFkr*

देश की समृद्धि का रथ तीव्र गति से अग्रसर है। हम व्यक्तिगत अथवा दलगत मतभेदों को भुलाकर, द्वेष भाव त्यागकर इस पवित्र यज्ञ में भाग लें। जिन शहीदों ने स्वाधीनता के प्रहरी बनकर अपना सर्वस्व होम किया है उन हुतात्माओं को हम प्रणाम करें तथा उनकी शहादत का मूल्य चुकाने के लिए उनके पवित्र पथ का अनुगमन करें। भारत के भव्य गणतंत्र का रूप सजाने और संवारने हेतु हम त्याग, तपस्या और सहिष्णुता का पथ अपनायें। यदि हमने लाखों–करोड़ों की सम्पत्ति अर्जित कर ली है तो यह सम्पत्ति यहीं छूट जायेगी। स्वर्गारोहण के समय केवल धर्म हमारे साथ होगा। त्याग, बलिदान और समर्पण करने वाले कर्मवीर मृत्यु के बाद भी याद किये जाते हैं। आईये! हम भी कुछ ऐसा कर दिखाएं कि आने वाली पीढ़ियाँ हमें आदर और श्रद्धा के साथ स्मरण करें।

भूमण्डल का विशालतम गणतंत्र, विश्व का गरिमामय लोकतंत्र संसार का सर्वाधिक बृहद संविधान, जन–जन को समरूप महिमा मण्डित करने वाली न्याय परक आचार संहिता, समाज के दलित और पिछड़े वर्ग के अभ्युत्थान के लिए संकल्पित विशाल विधिकोश, जन साधारण की सेवा सुरक्षा और उनके सर्वांगीण उत्थान के लिए संकल्पबद्ध प्रारूप महान शिक्षाविद् इतिहासवेत्ता डॉ. राजेन्द्र प्रसाद दलितों के मसीहा डॉ. भीमराव अम्बेडकर तथा राजर्षि पुरुषोत्तम दास टण्डन जैसे महापुरुषों की विद्वन्मण्डली ने लोक कल्याणकारी संविधान की रचना की, जिसे 26 जनवरी, 1950 को भारत ने पूर्ण निष्ठा से अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित किया और भारत ने विशाल गणराज्य की स्थापना की। सुनहरे स्वप्न देखे थे उस विद्वन्मण्डली ने जिसे संविधान की भाषा में 'संविधान निर्मात्री सभा' कहा जाता है। जन–जन के मन में आशा का सूर्य उदित हुआ.. हर्षातिरेक से नाच उठा हर उदास मन... अब भारत बहुमुखी प्रगति करेगा, जन–जन के कष्ट दूर होंगे। प्रत्येक असहाय को सहारा मिलेगा, बेरोजगारों को रोजगार मिलेगा, स्वराज्य की स्थापना होगी, देश प्रत्येक क्षेत्र में समृद्ध होगा, आत्मनिर्भर और स्वावलम्बी बनेगा, बकरी और शेर एक घाट पर निःशंक होकर पानी पियेंगे, सभी को न्याय मिलेगा.... सच, महात्मा गाँधी ने जिस रामराज्य के सपने दिखाये थे... वह भारत ऐसा ही समृद्ध खुशहाल और न्याय प्रिय देश था... उस स्वप्न के अनुसार त्याग, संपर्क और सेवा की मूर्ति होंगे हमारे कर्णधार प्रजा के सच्चे अनुरंजक प्रजा के हित चिन्तक, देशोद्धारक जनता के निःस्वार्थ सेवक, निर्भीक, तेजस्वी और ऊर्जावान प्रतिनिधि जो देश की डूबती हुई नौका को पार लगायेंगे। अपना सर्वस्व न्यौछावर कर देंगे, भारतमाता की पुष्कल समृद्धि के लिए।

कालचक्र निस्सीम है। दशक व्यतीत होते गये। स्वतंत्रता संग्राम और आजाद भारत की न जाने कितनी महान विभूतियाँ इस असार संसार से विदा हो गई। राष्ट्रमूर्ति इंदिरा प्रियदर्शनी तथा राजीव गाँधी के बलिदान के बाद मानो त्याग और समर्पण का अध्याय ही समाप्त हो गया। भूख पेट में खाँव–खाँव करने लगी। मन–मस्तिष्क पर स्वार्थ की मोटी परत जम गई। देश की समृद्धि को घोटालों का ग्रहण लगने लगा। राजपुरुषों की हया और शर्म मानों बर्फ की मानिन्द पिघल कर पानी हो गई। एक के बाद एक घोटाला बोफोर्स काण्ड यूरिया काण्ड तेलगी काण्ड जैन बन्धु डायरी ताज कोरिडोर काण्ड, टू जी स्पैक्ट्रम घोटला, व्यापम घोटला और धीरे–धीरे देश इन घोटालों की नजर हो गया राजपुरुषों की आस्था स्वदेश से विचलित होकर स्विस बैंक में केन्द्रित हो गयी। देश की अस्मिता इतनी गिर गई कि भारत के रक्षामंत्री के विदेश पहुँचने पर उनके वस्त्र उतार कर तलाशी ली गई। पाकिस्तान के राष्ट्राध्यक्ष के शुभागमन पर भारत में आगरा को इन्द्रलोक बनाने में करोड़ों की धनराशि पानी की तरह बहा दी। दूसरी ओर भारत के रक्षामंत्री के विदेश पहुँचने पर ऐसा भर्त्सनापूर्ण व्यवहार।

कहाँ गया भारत का वह मार्तण्ड सा चमकता भाल? क्या इतने दशकों की स्वाधीनता का यही प्रसाद है? यही अनमोल पूंजी हम अर्जित कर पाये इस दीर्घ अन्तराल में? कहीं जघन्य अपराधों में लिप्त मंत्रीगण। कहीं मैच फिक्सिंग में लिप्त यशस्वी खिलाड़ी कहीं विश्वविद्यालयों से 'आउट' होते प्रश्न पत्र कहीं कुख्यात अपराधियों पर 'पोटा' का कलंक और फिर टिनोपाल से वह कलंक धोकर उसी व्यक्ति को मंत्री पद पर अभिषित किया जाना। धन्य है यह लोकतंत्र। विशाल गणतंत्र की दुर्भेद्य अनबूझ पहेलियाँ।

धूल में मिल गये वे सुनहरे स्वप्न जो संविधान निर्मात्री सभा ने संजोये थे। उनका आदर्श था सच्चरित्र, दुग्ध धवल आचरण वाले देश भक्त निर्वाचित होकर सदन में पहुँचेंगे। परखच्चे उड़ गये उस आदर्श के। एक से एक दागदार अपराधी सदन में पहुँच रहा है। परिणाम वही। देश सेवा के नाम पर स्वपोषण, अपनी सात–सात पीढ़ियों का पोषण और जनता जनार्दन? करती रहे त्राहि माम् त्राहि माम्।

खेद! आज सदन में फूल नहीं बिखेरे जाते बल्कि जूते चप्पलें चलती हैं। अपशब्दों का प्रयोग होता है। माइक उखाड़ कर विरोधी दल पर फेंके जाते हैं। सदन की मर्यादा मानो काफूर बनकर उड़ गई। शेष रह गया स्वच्छन्द आचरण। अर्थ दोहन और लोक कल्याण के स्थान पर स्वकल्याणकारी योजनाओं का क्रियान्वयन। धर्म निरपेक्षता का नारा एक फैशन बन गया है। धर्म की सनातन आस्थाओं पर सुनियोजित कुठाराघात हो रहा है। भारत की धर्म प्रवण आस्थाओं पर बाम पन्थ का मंडराता हुआ साया स्पष्ट दृष्टिगोचर हो रहा है जिससे बेखबर होकर भारत की भोली–भाली आस्थावान जनता खर्राटे भरकर सो रही है।

गणतंत्र दिवस की पावन बेला पर हमारी कामना है। इन राजनीतिक षड्यन्त्रों का अन्त हो, हमारे निर्वाचित नेता निहित स्वार्थों को त्यागकर, दलगत भावना से ऊपर उठकर राष्ट्र की सेवा करें और जन–जन की समस्याएँ सुनकर उनका यथा सम्भव समाधान करें। डॉक्टर, इंजीनियर, अधिवक्ता तथा शिक्षक वृन्द, धन–लोलुपता त्यागकर निःस्पृह भाव से कर्त्तव्य पालन करें, बालकों में राष्ट्रभक्ति के भाव अंकुरित करें, उन्हें पश्चिमी संस्कारों में न रंग कर छत्रपति शिवा और राणा प्रताप जैसा वीर और समर्पित सेनानी बनायें। भारत भौगोलिक एवं आर्थिक संसाधनों से समृद्ध राष्ट्र है। जब दो अरब हाथ भारत की पुष्कल समृद्धि के लिए एक साथ व्योम में उठेंगे तो असम्भव भी सम्भव हो जायेगा। हमें चाहिए हम एक दूसरे की उंगली थामकर आगे बढ़ें किसी को पीछे न धकेलें। प्रत्येक धर्म का आदर करें तथा एक–दूसरे की भावनाओं को जानकर उसका मार्ग प्रशस्त करें। श्रुति कहती है –

^^lxPN/oa lon/oa la oks eukfal tkurkeA**

कोई धर्म घृणा या द्वेष की शिक्षा नहीं देता। हमारा सनातन उद्घोष है –

^^Jw;rka /keZ loZLoa JqRok pSo/kk;rkeA
vkReu% izfrdwykfu ijs"kka u lekpjsrAA**

सर अल्लामा इकबाल का कथन है – ^^etgc ugha fl[kkrk vkil esa cSj j[kuk fgUnh gSa ge oru gS] fgUnksLrka gekjkA** हमारा प्रयास होना चाहिए। इस गुलशन का हर फूल महके, चमन के प्रत्येक फूल पर शबाब निखरे। इसके लिए परम आवश्यक है घृणा, द्वेष और वैमनस्य का पथ त्याग कर हम मानव मात्र से प्रेम करें। जीवन ताप त्रय से पीड़ित है। दया, ममता और करुणा की त्रिवेणी प्रवाहित होने पर ही मानव के मन की प्यास बुझेगी और जन–जन के हृदय में अमृत स्पन्दिनी मन्दाकिनी प्रवाहित होगी। हम पवित्र मन से संकल्प लें।

देश की समृद्धि का रथ तीव्र गति से अग्रसर है। हम व्यक्तिगत अथवा दलगत मतभेदों को भुलाकर, द्वेष भाव त्यागकर इस पवित्र यज्ञ में भाग लें। जिन शहीदों ने स्वाधीनता के प्रहरी बनकर अपना सर्वस्व होम किया है उन हुतात्माओं को हम प्रणाम करें तथा उनकी शहादत का मूल्य चुकाने के लिए उनके पवित्र पथ का अनुगमन करें। भारत के भव्य गणतंत्र का रूप सजाने और संवारने हेतु हम त्याग, तपस्या और सहिष्णुता का पथ अपनायें। यदि हमने लाखों–करोड़ों की सम्पत्ति अर्जित कर ली है तो यह सम्पत्ति यहीं छूट जायेगी। स्वर्गारोहण के समय केवल धर्म हमारे साथ होगा। त्याग, बलिदान और समर्पण करने वाले कर्मवीर मृत्यु के बाद भी याद किये जाते हैं। आईये! हम भी कुछ ऐसा कर दिखाएं कि आने वाली पीढ़ियाँ हमें आदर और श्रद्धा के साथ स्मरण करें। बलिदानों की परिपाटी अमर रहें। भारत माता के हाथ में सुशोभित तिरंगा ध्वज युगों–युगों तक व्योम में फहराता रहे। भारत महान की कीर्ति विश्व में अमर रहे चिरस्थाई हो यही हमारी मंगल कामना है।

^^ekrk Hkwfe% iq=ks·ga i`fFkO;k% ueks ek=s i`fFkO;SA**

& fot; okfVdk] dkBh u-&3]
flfoy ykbUl] cnk;w ¼m- iz-½

वेदाधारित हो गणतन्त्र

जिसके अंकुर को सींचा था, अमर शहीदों ने शोणित से,
वही दिखायी अब पड़ते हैं, उत्पीड़ित से व शोषित से।
सभी जगह नीचे से ऊपर, व्याप्त हुआ है भ्रष्टाचार,
पतित हुआ है चरित्र राष्ट्र का, बढ़ा जा रहा अत्याचार।
सत्ताधारी शासक सारे, हुए स्वार्थ में अन्धे है,
स्वार्थपूर्ति के लिए उन्होंने, किए प्रदूषित धन्धे हैं।
सत्य धर्म ले रहा सिसकियां, दानवता हो गई विभोर,
डॉंट रहा है अब सुजनों को, पापाचारी कलुषित चोर।
पश्चिम की आंधी ने कैसा, आज यहां कुहराम मचाया,
सत्य सनातन की संस्कृति को, इस धरती से आज उड़ाया।
टूट रहे परिवार हमारे, टूट रहा सम्पूर्ण समाज,
उग्रवाद के जालों में फंस, हुआ प्रकम्पित भारत आज।
सीमाएं भी आज देश की, नहीं रही सम्पूर्ण सुरक्षित,
लगा हुआ है आज दांव पर, भारत का सर्वोपरि हित।
विषम परिस्थितियों से होंगे, कैसे हम सब अब उन्मुक्त,
आओ करें विचार सभी हम, कैसे हो इनसे अब मुक्त।
एक मार्ग ही शेष बचा है, वैदिक पथ हम सब अपनाएं,
जिससे मानवता रक्षित हो, दानवता को दूर भगाएं।
महिमण्डल पर सर्वोपरि हो, भारत, फिर जागे वह मन्त्र,
जयी बने फिर से मानवता, वेदाधारित हो गणतन्त्र।

- राधेश्याम आर्य

आर्य प्रतिनिधि सभा दक्षिण अफ्रीका की पूर्व प्रधान प्रो. ऊषा देसाई का आकस्मिक निधन

आर्य प्रतिनिधि सभा दक्षिण अफ्रीका की पूर्व प्रधान प्रो. ऊषा देसाई के आकस्मिक निधन के समाचार को सुनकर पूरा आर्य जगत शोकाकुल है। प्रो. देसाई केवल आर्य प्रतिनिधि सभा दक्षिण अफ्रीका की प्रधान ही नहीं थीं बल्कि आर्य जगत की एक विख्यात विदुषी एवं प्रभावशाली नेता भी थीं। प्रो. ऊषा देसाई दक्षिण अफ्रीका में आर्य समाज और हिन्दी का प्रचार–प्रसार करने वाले प्रसिद्ध आर्य विद्वान् पं. नरदेव वेदालंकार जी की सुपुत्री थीं। पं. नरदेव जी का नाम आर्य समाज के उन यशस्वी कर्णधारों में आता है जिन्होंने दक्षिण अफ्रीका जैसे देश में आर्य समाज के प्रचार–प्रसार के लिए समर्पित भावना से काम किया। प्रो. ऊषा देसाई ने भी अपने पूज्य पिताश्री की विरासत को बड़ी निष्ठा और दृढ़ता के साथ संभाला तथा दक्षिण अफ्रीका में वर्षों तक आर्य समाज का नेतृत्व किया। प्रो. ऊषा देसाई अपनी योग्यता, कर्मठता तथा कुशलता के कारण किसी आर्य प्रतिनिधि सभा का वर्षों तक अध्यक्ष के रूप में नेतृत्व करने वाली प्रथम महिला बनीं।

सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने बहन प्रो. ऊषा देसाई जी के निधन पर गहरा दुःख प्रकट करते हुए कहा कि ऊषा देसाई जी जब आर्य प्रतिनिधि सभा, दक्षिण अफ्रीका की प्रधान थीं, उनके कार्यकाल के दौरान मुझे भी 2–3 वर्षों तक लगातार हर वर्ष दक्षिण अफ्रीका जाने का अवसर प्राप्त हुआ और उनके सान्निध्य में आर्य समाज का वहाँ पर प्रचार–प्रसार करने का सौभाग्य मिला। उनकी मेरे प्रति विशेष आत्मीयता रही जिससे मैं बहुत ही प्रभावित हुआ। ऐसी विदुषी बहन का हम सबके बीच से अचानक चले जाना आर्य समाज संगठन की अपूर्णीय क्षति एवं गहरा आघात लगाने वाला है। परन्तु परमात्मा के नियम के सामने हम सब लोगों को नतमस्तक होने के अतिरिक्त और कोई विकल्प नहीं है।

स्वामी आर्यवेश जी ने सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा एवं समस्त आर्य जगत की ओर से आदरणीया बहन प्रो. ऊषा देसाई जी के निधन पर विनम्र श्रद्धांजलि एवं गहरा दुःख प्रकट करते हुए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना की, कि उनकी आत्मा को शांति एवं सद्‌गति प्रदान करें तथा शोक संतप्त परिवार तथा आर्यजनों को इस असह्य कष्ट को सहन करने की शक्ति दें।

वयोवृद्ध आर्यनेता श्री मिठाई लाल सिंह जी को पत्नी शोक

आर्य समाज के लिए सर्वात्मना समर्पित वयोवृद्ध आर्यनेता श्री मिठाई लाल सिंह जी की सहधर्मिणी, पूज्या माता सावित्री सिंह जी का 89 वर्ष की आयु में 29 दिसम्बर, 2020 को सुबह 11 बजे सुश्रुषा अस्पताल, दादर मुम्बई में उपचाराधीन होने के दौरान आकस्मिक निधन हो गया है। आदरणीया माता जी आर्य समाज माटुंगा, मुम्बई के अन्तर्गत संचालित होने वाले दयानन्द बालक/बालिका विद्यालय एवं वैदिक विद्यालय एण्ड जूनियर कॉलेज मुलुण्ड की वरिष्ठ सदस्य एवं ट्रस्टी थीं।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने माता सावित्री देवी जी के निधन पर गहरा दुःख प्रकट करते हुए कहा कि माता सावित्री देवी जी ने अपने पति श्री मिठाई लाल सिंह जी के कन्धे से कन्धा मिलाकर उनके हर कार्य में सहयोग

किया था। वे अत्यन्त मिलनसार तथा आर्य समाज के कार्य में बढ़–चढ़कर भाग लेने वाली माता थीं। उन्होंने सदैव आर्य विचारधारा के अनुरूप अपना जीवन यापन किया। आदरणीया माता जी एक धर्मपारायणा एवं कुशल गृहणी थीं, उनके निधन से परिवार, राष्ट्र एवं आर्य समाज संगठन की अपूर्णीय क्षति हुई है।

स्वामी आर्यवेश जी ने समस्त आर्य जगत तथा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से आदरणीया माता सावित्री सिंह जी को विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना की, कि उनकी आत्मा को शांति एवं सद्‌गति प्रदान करें तथा सभी पारिवारिक जनों एवं शुभचिन्तकों को इस असह्य कष्ट को सहन करने की शक्ति दें।

आर्य समाज के कर्मठ कार्यकर्ता तथा समाजसेवी श्री अशोक आर्य जी नहीं रहे

आर्य समाज के निष्ठावान समर्पित कार्यकर्ता श्री अशोक आर्य जी का विगत दिनों अचानक निधन हो गया है। श्री अशोक जी के निधन पर श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि 1967 में जब स्वामी इन्द्रवेश जी एवं स्वामी अग्निवेश जी ने सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् की स्थापना की थी तो श्री अशोक जी अबोहर (पंजाब) में नौकरी करते थे और वहीं पर उन्होंने स्वामी इन्द्रवेश जी की प्रेरणा पर सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के साथ जुड़कर आर्य समाज के प्रचार–प्रसार के कार्य में अपने क्रांतिकारी विचारों से सामान्य जनता को जागृत करने का कार्य प्रारम्भ किया था। काफी समय तक पंजाब में रहने के पश्चात् उन्होंने गाजियाबाद में रहना प्रारम्भ किया और अपने क्रांतिकारी विचारों के अनुरूप

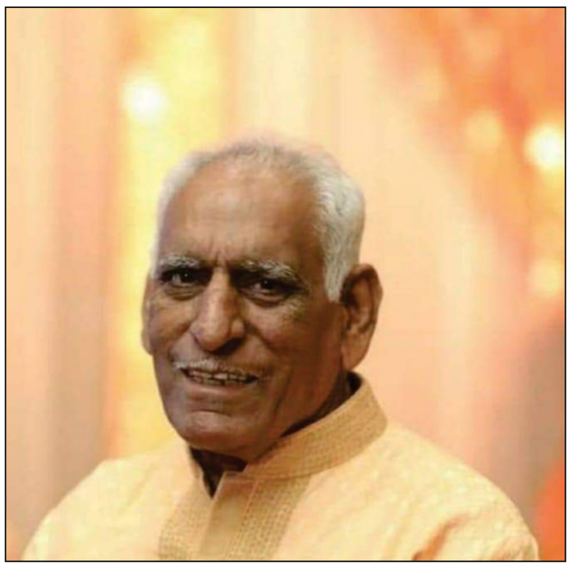

यहाँ पर भी आर्य समाज एवं महर्षि दयानन्द जी के मिशन के प्रचार–प्रसार के कार्य को निरन्तर जारी रखा। ऐसे कर्मठ एवं समाजसेवी महानुभाव का हम सबके बीच से अचानक चले जाना आर्य समाज संगठन एवं राष्ट्र की अपूर्णीय क्षति है। परन्तु परमात्मा के नियम के सामने हम सब लोगों को नतमस्तक होने के अतिरिक्त और कोई विकल्प नहीं है।

स्वामी आर्यवेश जी ने श्री अशोक आर्य जी के निधन पर गहरा दुःख प्रकट करते हुए उनकी आत्मा को शांति एवं सद्‌गति प्रदान करने तथा उनके शुभचिन्तकों को इस असह्य कष्ट को सहन करने की शक्ति प्रदान करने की परमपिता परमात्मा से प्रार्थना की।

लब्ध प्रतिष्ठ विद्वान् श्री भरत लाल शास्त्री जी का निधन

आर्य समाज के लब्धप्रतिष्ठ विद्वान् श्री भरत लाल शास्त्री जी का दिनांक 8 जनवरी, 2021 को अचानक निधन हो गया है। श्री भरत लाल जी लम्बे समय तक हरियाणा के हांसी शहर को केन्द्र बनाकर महर्षि दयानन्द जी के सिद्धान्तों के अनुरूप आर्य समाज के प्रचार–प्रसार के कार्य में लगे रहे। विगत वर्ष से शास्त्री जी कुछ अस्वस्थ रहने के कारण गुड़गांव में रहने लगे थे और वहीं पर उनका अचानक निधन हो गया।

सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने उनके निधन पर श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए कहा कि श्री शास्त्री जी मेरे परम हितैषी थे। शास्त्री जी की व्याख्यान देने की शैली अत्यन्त प्रभावशाली एवं मधुर थी। उनकी वाणी में इतना ओज रहता था कि उनके द्वारा संचालित वेद

कथाओं में आर्यजन उनका व्याख्यान सुनकर मन्त्रमुग्ध हो जाया करते थे। आदरणीय शास्त्री जी के निधन से आर्य समाज संगठन एवं राष्ट्र की अपूर्णीय क्षति हुई है। परन्तु परमात्मा के नियम के सामने हम सब लोगों को नतमस्तक होने के अतिरिक्त और कोई विकल्प नहीं है।

स्वामी आर्यवेश जी ने सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से आदरणीय श्री भरत लाल शास्त्री जी के निधन पर गहरा दुःख प्रकट करते हुए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना की, कि उनकी आत्मा को शांति एवं सद्‌गति प्रदान करें तथा उनके शुभचिन्तकों एवं पारिवारिक जनों को इस असह्य कष्ट को सहन करने की शक्ति दें।

पृष्ठ 1 का शेष

भारत विकास परिषद् के तत्वावधान में 25 दिव्यांगजनों को स्वामी आर्यवेश जी के कर–कमलों से वितरित किये गये निःशुल्क कृत्रिम अंग

संसार का उपकार करना था। किसी आर्य समाजी, किसी हिन्दू या किसी भारतीय का उपकार करना नहीं, अपितु मानव मात्र का उपकार करना लक्ष्य था। उन्होंने कहा कि मनुष्यता एवं नैतिकता के जितने भी उच्च गुण हैं वे सब भारतीय संस्कृति में परिलक्षित होते हैं। स्वामी जी ने कहा कि मनुष्य का जीवन सही मायने में तभी सार्थक होगा जब वह सामाजिक होकर एक–दूसरे का सहयोग करते हुए सभी को साथ लेकर चलें। एक–दूसरे की सहायता करें। उन्होंने कहा कि हमारी संस्कृति में दया, दान व परोपकार का बहुत महत्त्व है और निराश्रित, असहाय, निर्धन और दिव्यांगजनों की सेवा से बढ़कर और कुछ भी नहीं हो सकता। उन्होंने दिव्यांगजनों को इंगित करते हुए कहा कि दिव्यांगजनों को अपने मन में कभी भी कुंठा नहीं पालनी चाहिए और अपने हौंसले बुलन्द रखते हुए जीवन पथ पर अग्रसर होते रहना चाहिए। स्वामी जी ने भारत विकास परिषद् तथा आर्य विकास परिषद् के समाजोपयोगी कार्यों की सराहना करते हुए इस महत्त्वपूर्ण कार्यक्रम की प्रशंसा की तथा इस प्रकार के कार्यों को अन्य संगठनों के लिए अनुकरणीय बताया।

इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि श्री राज कुमार मक्कड़ आयुक्त हरियाणा राज्य दिव्यांगजन ने कहा कि जरूरतमंद का सहयोग करके जो शांति मिलती है वह अन्य कहीं भी नहीं प्राप्त हो सकती है। उन्होंने कहा कि हमें सामाजिक ताने–बाने में रहते हुए एक–दूसरे के सुख–दुःख में शामिल होकर जीवन जीना चाहिए।

स्थानीय शाखा अध्यक्ष श्री अमरजीत चौधरी ने कहा कि समाजसेवा तभी सार्थक होगी जब वास्तव में जरूरतमंद व्यक्ति को सहायता प्राप्त होगी। सही मायने में असली समाजसेवा जरूरतमंद के सहयोग करने से ही होती है। श्री महेन्द्र जावला बहल ने कहा कि दिव्यांगजन भारतीय समाज व संस्कृति के श्रेष्ठ और सम्मानीय व्यक्तित्व के प्रतीक हैं।

इस अवसर पर दिव्यांगजनों ने अपने प्रति किये गये इस महत्त्वपूर्ण सेवा कार्य की सराहना करते हुए कहा कि कृत्रिम अंग मिलने से हमारे दैनिक दिनचर्या में बहुत आसानी होगी। हम आयोजकों का हृदय से धन्यवाद ज्ञापित करते हैं।

इस अवसर पर संरक्षक डॉ. एन.पी. गौड़ ने आगन्तुक अतिथियों का परिचय करवाया और भारत विकास परिषद् के कार्यों का विवरण प्रस्तुत किया। समारोह में डॉ. एन.पी. गौड़ द्वारा लिखित यज्ञ की पुस्तक का विमोचन भी स्वामी आर्यवेश जी के कर–कमलों द्वारा किया गया।

महर्षि दयानन्द सरस्वती कृत
यजुर्वेद भाष्य
भारी छूट पर उपलब्ध
250 रुपये मूल्य का यजुर्वेद भाष्य
मात्र 150 रुपये में दिया जा रहा है
(डाक व्यय अतिरिक्त)
(जल्दी करें ग्रन्थ सीमित मात्रा में ही उपलब्ध है)
प्रकाशक : सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5, आसफ अली रोड, नई दिल्ली–2

असत्य में अश्रद्धा और सत्य में श्रद्धा

– महात्मा चैतन्य स्वामी

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने जीवन को सार्थक, उत्कृष्ट, पवित्र तथा श्रेष्ठ बनाने का सूत्र इस एक पंक्ति में ही दे दिया कि – 'सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सदा उद्यत रहना चाहिए।' वेद भी हमें इसी प्रकार का महत्त्वपूर्ण उपदेश देते हुए कहता है –

दृष्ट्वा रूपे व्याकरोत् सत्यानृते प्रजापतिः।
अश्रद्धामनृतेऽदधाच्छ्रद्धां सत्ये प्रजापतिः।।

– यजु. 19.77

(प्रजापतिः) प्रजापति परमात्मा ने (रूपे दृष्ट्वा) सत्य व असत्य दोनों के रूपों को देखकर (सत्यानृते व्याकरोत्) सत्य और असत्य को अलग–अलग छांट दिया, (अनृते) असत्य में (अश्रद्धाम्) अश्रद्धा को (अदधात्) रखा और (सत्ये) सत्य में (श्रद्धाम् अदधात्) श्रद्धा को रखा।

ईश्वर प्राप्ति जीवन का परम लक्ष्य है। मगर अज्ञानता के कारण मनुष्य परमात्मा के सम्बन्ध में अनेक प्रकार की भ्रान्तियों में फंस गया है। जो लोग परमात्मा के अस्तित्व को ही नहीं मानते उनकी बुद्धि पर तो तरस ही आता है। भला, जब समूचे ब्रह्माण्ड में हमें एक विशेष सुव्यवस्था दिखाई देती है तो यह भी मानना ही पड़ेगा कि यदि व्यवस्था है तो व्यवस्थापक भी कोई न कोई अवश्य है। दूसरी ओर जो लोग परमात्मा के अस्तित्व को मानते हैं वे अज्ञानता के कारण उसके प्रारम्भिक स्वरूप से ही अनभिज्ञ हैं। कोई देवी–देवताओं एवं महापुरुषों को तथा कोई पीरों–पैगम्बरों आदि को ही ईश्वर मान बैठा है। आज तो कुछ ऐसी अज्ञानता की आंधी चली हुई है कि तथाकथित गुरु स्वयं को ही परमात्मा से बड़ा मानने लगे हैं और उनके भक्त भी परमात्मा की उपासना के स्थान पर उन्हीं के गुण को गाने और आरती आदि उतारने में लगे हुए हैं। आज व्यक्ति सत्य ज्ञान, सत्य कर्म तथा सत्य उपासना से बहुत दूर हो गया है, ऐसे भ्रमित लोगों की ओर से वेद (अथर्व. 20.34.5, ऋ. 2. 12.5) में एक प्रश्न उठाया गया है कि – स्मां पृच्छन्ति कुह स इति? आसुरी वृत्ति वाले लोग पूछा करते हैं कि वह कहां है? इसका उत्तर दिया गया श्रदस्मै धत्त स जनास इन्द्रः। उसे श्रद्धा की आंखों से देखा जा सकता है। वेद में श्रद्धा की महिमा इस प्रकार बताई गई है –

श्रद्धयाग्निः समिध्यते श्रद्धया हूयते हविः।
श्रद्धां भगस्य मूर्धनि वचसा वेदयामसि।।

– ऋ. 10.151.1

श्रद्धा से अग्नि प्रज्ज्वलित होती है और श्रद्धा से ही हवि दी जाती है, आत्म बलिदान किया जाता है। समस्त ऐश्वर्यों के मूर्धा स्थान में, श्रद्धा को हम लोग वेदवाणी द्वारा प्रकट करते हैं। मन्त्र का भाव इस प्रकार लिया जा सकता है कि हमें सफलता प्राप्त करने के लिए प्रत्येक कार्य श्रद्धायुक्त हो कर ही करना चाहिए। वेद में अन्यत्र भी कहा गया है –

अग्ने समिधमाहार्षं बृहते जातवेदसे।
स मे श्रद्धां च मेधां च जातवेदाः प्रयच्छतु।।

अथर्व. 19.64.1

इस मन्त्र का भाव भी यही है कि हम उस अग्नि अर्थात् परमात्मा को श्रद्धायुक्त होकर पुकारें, श्रद्धा से ही समिधाओं का चयन करें तो वह प्रभु हमें श्रद्धा और मेधा से संयुक्त करेंगे। श्रद्धा से ही ज्ञानाग्नि प्रज्ज्वलित होती है स्वयं सूखी समिधा बनना होगा। उपनिषदों में आत्मज्ञान के पिपासु सूखी समिधा लेकर ही ऋषियों के पास जाते थे।

व्यक्ति के मन में दो प्रकार के भाव उठते हैं, एक को श्रद्धा कहते है।, दूसरे को अश्रद्धा। श्रत् का अर्थ है सत्य, 'धा' का अर्थ है धारण करना। असत्य धारण से व्यक्ति रस्सी को भी सांप समझ बैठता है, मगर जब सत्य से परिचय होगा कि यह सांप नहीं बल्कि रस्सी है तो वह निर्भय हो जायेगा। इसलिए स्वाभाविक रूप से व्यक्ति सत्य में ही श्रद्धा करता है, असत्य में नहीं। कुत्ते के सामने कागज की पुड़िया फैंको, वह उसे रोटी समझकर उसकी ओर झपटेगा, मगर फिर सत्य से परिचित हो जाने पर कि यह रोटी नहीं बल्कि कागज की पुड़िया है तो वह तुरन्त ही मुंह फेर लेगा, दोष तो अज्ञान का है श्रद्धा का नहीं। वैशेषिक दर्शन (9.10) कहता है कि ज्ञानेन्द्रियों व अन्तःकरण के दोष से अविद्या उत्पन्न होती है। आंख में खराबी होगी तो वह म को भ तथा अग्ने को अग्रे पढ़ लेगा..... इसी प्रकार जब बुद्धि में विकार होगा तो व्यक्ति भूत प्रेतों से डरेगा। कोई कष्ट आने में ग्रहों के चक्कर में फंस जायेगा, अन्य भी अनेक प्रकार की भ्रांतियों में फंस जायेगा इसलिए वेदमन्त्र कहता है कि सत्य और अनृत के दो रूपों को अलग–अलग पहचानने की कोशिश करनी चाहिए और उसका ढंग बताया – . दृष्ट्वा (दर्शन), 2. व्याकरोत् (व्याकरण)। दर्शन की हमने बात की है, पानी मिले हुए दूध पर व्यक्ति की अश्रद्धा हो जाती है। जब कोई व्यक्ति किसी को ठग रहा होता है तो वास्तव में उसे तो पता होता है कि मैं असत्य बोल रहा हूँ मगर वह दूसरों को उस ज्ञान से वंचित रखकर ठगता है। असत्य पर श्रद्धा अज्ञानवश ही होती है। इसलिए श्रद्धा है – अज्ञानता दूर करके सत्य तक पहुंचना। दूसरा ढंग है – व्याकरण। व्याकरण का अर्थ है सत्य को झूठ से अलग कर देना। अन्ध श्रद्धा क्या है? जिसे न ज्ञान है और न ही व्याकरण की विधि मालूम है। इसीलिए आज तथाकथित धर्माभिमानी व्यक्ति को अज्ञानी बनाकर खूब लूट रहे हैं। कोई देवदूत, गुरु, पैगम्बर आदि बनकर अज्ञानीको लूट रहा है। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने जो यह कहा कि 'सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए। यहां उद्यत रहने का अर्थ है कि सत्य– असत्य का भेद जानकर (दर्शन व व्याकरण द्वारा) स्वयं ही आपकी सत्य के प्रति श्रद्धा हो जायेगी। मगर व्यक्ति अपने किसी न किसी लाभ व लोभ के कारण असत्य में श्रद्धा कर बैठता है और यही अन्ध श्रद्धा है। आज जो अनेक प्रकार के पाखण्डादि फैले हुए हैं, जब उन्हें ज्ञान और व्याकरण की कसौटी पर परखेंगे तो ये धराशाई हो जायेंगे इसलिए स्वार्थी लोग सत्य ज्ञान और व्याकरण से ही डरने लगते हैं क्योंकि उनकी वे धारणाएं ही ध्वस्त होने लगती हैं। इसलिए अनृत के प्रति अश्रद्धा और ऋत के प्रति श्रद्धा होनी चाहिए। खोटा सिक्का भी तभी चल चलता है जब तक उसे अपने अज्ञान के कारण व्यक्ति सही समझता है। यह खोटा है, पता चलते ही उसे दूर फैंक दिया जाता है।

प्रभु भी क्योंकि श्रद्धा की आंखों से दिखाई देते हैं इसलिए पहले उन विषयों के प्रति अश्रद्धा होनी चाहिए जिनके कारण हम परमात्मा को भूले हुए हैं। व्यक्ति जिस आनन्द को चाहता है उसे वह भौतिक सुखों में खोज रहा है मगर इनके भोगने से वह आनन्द प्राप्त न हुआ है और न ही कभी प्राप्त होगा। इसलिए हम जिसे सुख समझते हैं उसके बारे में चिन्तन करते हैं। योगदर्शन का एक सूत्र है – परिणामतापसंस्कारदुःखैर्गुणवृत्तिविरोधाच्च दुःखमेव सर्व विवेकिनः (2.15)। इस सूत्र में बताया गया है कि परिणाम, ताप, संस्कार दुःखों के कारण और गुणवृत्तिविरोध के कारण विवेकी के लिए सांसारिक सुख भी दुःख ही हैं। इस चिन्तन को गहराई से अपने चित्त में बिठाने पर ही प्रभु को प्राप्त करने के प्रति श्रद्धा पैदा होगी। प्रभु प्राप्ति की यात्रा का आरम्भ ही श्रद्धा से होता है। इसीलिए उपनिषद् का ऋषि भी कहता है – असतो मा सद्गमय, सर्वप्रथम असत्य से सत्य की ओर ले जाने की बात कही क्योंकि उसके बाद ही तमसो मा ज्योतिर्गमय, व्यक्ति अन्धकार से प्रकाश की ओर जा सकेगा और फिर मृत्योर्माऽमृतं गमय। मृत्यु आदि दुःखों से छूटकर व्यक्ति को अमरत्व की प्राप्ति होगी। महर्षि दयानन्द जी ने कहा है कि वेद और वेदानुकूल स्मृतियां ही प्रमाण हैं। मनु महाराज ने भी कहा है – वेदोऽखिलो धर्ममूलम् तथा धर्म जिज्ञासमानानाम् प्रमाणं परमं श्रुतिः। इसीलिए वे कहते हैं – नास्तिको वेदनिन्दकः। फिर उन्होंने धर्म के चार मूल स्रोत बताएं हैं – वेदः स्मृतिः सदाचारः स्वस्य च प्रियमात्मनः।। वेद, वेदाध्ययन करने वाले पारंगत विद्वानों द्वारा रची गई वेदानुकूल स्मृतियां एवं शील (वेद विरुद्ध स्मृतियां व शील नहीं), सदाचार अर्थात् उन वेदानुकूल स्मृतियों को रचने वाले आप्त लोगों का वेदानुकूल आचरण और जो आत्मा को प्रिय है अर्थात् जिस कार्य में आत्मा को भय, शंका और लज्जा का अनुभव न हो बल्कि उत्साह, उमंग और प्रसन्नता के भाव पैदा हों। यही बात महर्षि दयानन्द जी कहते हैं।

आर्ष ग्रन्थों को ऋषि–मुनियों ने प्रमाणित ग्रन्थ माना, मगर समय–समय पर अपनी–अपनी कामनाओं के वशीभूत होकर लोगों ने अनेक प्रकार के अनार्ष ग्रन्थों की रचना कर डाली और लोग सत्य से बहुत परे होते चले गये। यहां तक कि सत्य का दामन छोड़कर श्रद्धा का सफर अन्ध श्रद्धा तक पहुंच गया। अब व्यक्ति पुनः आर्ष ग्रन्थों को प्रमाण मानें। वेद में सत्य की प्राप्ति का क्रम बताते हुए कहा गया है –

व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षयाप्नोति दक्षिणाम्।
दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते।।

– यजु. 19.30

(व्रतेन) व्यक्ति व्रत से (दीक्षाम्) दीक्षा समर्पणादि को (आप्नोति) प्राप्त होता है (दीक्षया) उस दीक्षा के द्वारा दक्षिणाम् आप्नोति) दक्षिणा को प्राप्त होता है अर्थात् (दीक्षित व्यक्ति स्वतः ही दान–वृत्ति वाला हो जाता है। उस दक्षिणा देने की वृत्ति से (श्रद्धाम्) सत्–सत्य धा– धारण अर्थात् सत्य के धारण को (आप्नोति) प्राप्त होता है। (श्रद्धया) उस श्रद्धा से (सत्यम् आप्यते) वह सत्य प्रभु को प्राप्त हो जाता है।

– महर्षि दयानन्द धाम, महादेव, सुन्दरनगर,
जिला–मण्डी (हि. प्र.)

शास्त्रार्थ महारथी आचार्य ब्रह्मदेव शास्त्री जी का असामयिक निधन

आर्य समाज के लब्ध प्रतिष्ठ विद्वान्, शास्त्रार्थ महारथी आचार्य ब्रह्मदेव शास्त्री जी का विगत दिनों अचानक निधन हो गया है। आचार्य ब्रह्मदेव जी निरन्तर आर्य समाज एवं वैदिक धर्म के प्रचार–प्रसार में संलग्न रहते थे और उनकी व्याख्यान देने की शैली इतनी प्रभावशाली थी जिसे सुनकर श्रोतागण मन्त्रमुग्ध हो जाया करते थे। ऐसे महान् विद्वान् का अचानक निधन हो जाना आर्य समाज संगठन एवं राष्ट्र की अपूर्णीय क्षति है। परन्तु परमात्मा के नियम के सामने हम सब लोगों को नतमस्तक होने के अतिरिक्त और कोई विकल्प नहीं है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने आदरणीय आचार्य ब्रह्मदेव शास्त्री जी के निधन पर गहरा दुःख प्रकट करते हुए उनकी आत्मा को शांति एवं सद्गति प्रदान करने तथा उनके शुभचिन्तकों एवं पारिवारिक जनों को इस असह्य कष्ट को सहन करने की शक्ति प्रदान करने की परमपिता परमात्मा से प्रार्थना की।

पेट के रोग और मेथी

–वैद्य राजेश शर्मा

मेथी का उपयोग शाक (सब्जी) और घरेलू औषध रूप में प्राचीन काल से होता रहा है।

मेथी का प्रभाव मुख्यतः पाचन संस्थान पर होता है। खराब पाचन वाले व्यक्तियों के लिए यह उपयोगी है। मेथी के सेवन से मुंह की लार ग्रंथियां उत्तेजित होकर लारस्राव बढ़ा देती हैं, जिससे पाचन संस्थान के अन्य अवयवों को सहायता मिलती है और उन पर अतिरिक्त कार्यभार नहीं पड़ता। मेथी आमाशय रस को सक्रिय करती है और यकृत पित्त के स्राव को भी खाद्य पदार्थ की आवश्यकतानुसार बढ़ाती है।

आंतों को यकृत पित्त पर्याप्त मिलने से भोजन का पाचन सुचारू रूप से होता है साथ ही अपचन के कारण होने वाले हानिप्रद सूक्ष्म कृमियों की उत्पत्ति नहीं हो पाती। मल को प्राकृतिक वर्ण प्राप्त (मल रंजन) होता है। मेथी में पाए जाने वाले तेल तथा फासफोरिक एसिड से उदर की स्वतंत्र वातनाड़ियों के तन्तुओं को ऊर्जा मिलती है, जिससे अफारा, पेटदर्द, अपच दूर होते हैं। यह आहार में से रस का पर्याप्त शोषण कराती है, जिससे मल में गाढ़ापन आता है। साथ ही आंतों की पुरःसरण गति को नियमित बनाती है, जिसके कारण कब्ज नहीं हो पाता। सुचारू पाचन के कारण आहार से शोषित रस, स्वास्थ्य के लिए आवश्यक तत्वों से परिपूर्ण होता है। ऐसे रस से आगे की धातुओं, रक्त, मांस आदि का पोषण क्रम भी प्राकृतिक रहता है और शरीर निरोगी तथा सबल बनता है।

मेथी में आमवातनाशक (एंटी र्यूमेटिक) द्रव्य टांई मेथिलेमिन पाया जाता है, जिसके कारण मेथी आमवात में लाभ पहुंचाती है। आमवात, सन्धिवात से पीड़ित व्यक्तियों को मेथी का प्रयोग अवश्य करना चाहिए। यह इस रोग पर तो लाभ पहुंचाती ही है, इसके साथ अन्य शारीरिक विकारों यथा–अग्निमांद्य, अरूचि, कब्ज, अफारा, वमन, ज्वर, जुकाम, बहुमूत्र आदि को भी दूर करती है। मेथी का प्रयोग करने से मधुमेह होने की सम्भावना कुछ सीमा तक घट जाती है। अनेक प्रान्तों में प्रसव होने के पश्चात् स्त्रियों को मेथी के लड्डू खिलाए जाते हैं, इससे प्राकृतिक स्थिति प्राप्त करने में स्त्रियों को मदद मिलती है।

चोट लगने पर : किसी भी वस्तु के आघात से अथवा गिरने पर लगी चोट से उत्पन्न सूजन और दर्द होने पर मेथी के दानों की पुल्टिस या मेथी के बीजों का चूर्ण और एक चौथाई आटा, घी लगाकर प्रभावित स्थान पर बांधने से लाभ होता है।

कब्ज : जिन लोगों को आतों की निर्बलता के कारण मलावरोध बना रहता हो, तो मेथी का चूर्ण तीन–तीन ग्राम प्रातः सायं गुड़ या जल के साथ कुछ दिनों तक लेने से पेट साफ रहने लगता है। मेथी कमजोर यकृत को बल प्रदान करती है।

बहुमूत्र : जिन व्यक्तियों के मूत्राशय की मांसपेशियाँ कमजोर हों और उनकी मूत्र धारण करने की शक्ति इससे प्रभावित होकर बार–बार मूत्र प्रवृत्ति होती हो तो मैथी के दानों का रस 20 से 50 मिलिलीटर, 500 मि0ग्रा0 कत्था और 5 से 10 ग्राम मिश्री मिलाकर प्रातः एक से दो सप्ताह तक प्रयोग करने से इसमें लाभ मिलता है।

नोटः इस विकार में यकृत की निर्बलता एक प्रमुख कारण है, अतः यकृत निर्बल हो और बहुमूत्र की शिकायत हो, तो ऐसे व्यक्तियों को घी, तेल एवं शक्कर से बने पदार्थ कम से कम प्रयोग में लेने चाहिए।

जीर्ण आमातिसार : आमातिसार अथवा आम संग्रहणी से पीड़ित होने पर मेथी के दानों का रस 40 मिली0 तथा शक्कर 5 ग्राम मिलाकर पिलाने अथवा मेथी का चूर्ण चार–चार ग्राम प्रातः सायं मठ्ठे में मिलाकर रूचि अनुसार भुना जीरा और सेन्धा नमक इसमें मिश्रित कर प्रयोग करने से इस रोग में काफी लाभ मिलता है।

प्रसूति पश्चात् की निर्बलता : मेथी मोदक (लड्डू) जिसमें और भी कुछ औषधियां मिश्रित की जाती हैं, का प्रयोग, महिलाओं को प्रसवोत्तर करवाने से कई प्रकार की स्वास्थ्य समस्याओं में लाभ मिलता है।

जीर्ण आमवात : आमवात के रोगी को मेथी दाना दो छोटे चम्मच, अदरख टुकड़ा 5 ग्राम वजन का, लहसुन 5 ग्राम, नमक आवश्यकतानुसार मिलाकर चटनी की तरह नित्य ताजा तैयार कर सेवन कराना बहुत फायदेमंद होता है।

सावधानी : रक्तपित्त से पीड़ित रोगियों तथा निःसंतान युवा पुरुषों को जो अल्पशुक्राणु (ओलिगोस्पर्मिया) समस्या से ग्रस्त हों, को मेथी का प्रयोग नहीं करना चाहिए।

यस्यच्छायाऽमृतम्

विद्यावाचस्पतिः श्री रामदत्त शास्त्री, पक्की सराय, अनूपशहर, बुलन्दशहरम् (उ. प्र.)

वैदिकवाङ्मयं हि नाम मानव मात्रस्य कृते सुखशान्तिसमृद्धिपरिपोषकं पुष्टिवर्धनं मनोविकारापहारि सद्विचारसार समुत्पादनपरं शश्वदात्माभ्युदयकारि जीवनज्योतिरादीप्तिकरम्। वैदिकवाङ्मयतरुर्हि नितरामच्छितो विततोऽहर्निशघनच्छाया प्रदायी मधुरफलवान्, समभ्युपेतपरिश्रान्तजनमानस शंकरोऽविरतवितततापपापहारी जगज्जीवातुरूपः। साम्प्रतम् अस्मद्देशे नवयूनां नवयुवतीनां च करेषु नापतति शमं शान्तिप्रदं सून्नतविचारवर्धकं तादृशं मङ्लमयं स्वस्थं सत्साहित्यम्, सदधीत्यनवतरुणा नवतरुण्यश्च्वाविरतं कलुषितविचारधारानिमग्नाः सततं श्रृंङ्गारभावजागरूकाः कामयमाना अपि सत्पथाध्वनीना न भवन्ति, प्रत्युत कलुषितभावभरितसाहित्या धीतितत्परास्तथाविधाऽविरतचलचित्रजगदर्शन संदीप्तकामवासनाऽनलास्तथा विधेष्वेवानिशं विचारेषु ब्रुडित मानसा न कथमपि जीवनाभ्युदयाध्वानं लभन्ते।

सत्यस्य पन्था वितो देवयानः

अयि भारतीया भ्रातरः! यदि यूयं वास्तविकं तथ्यं सुखमासदयितुं कामयध्वे तर्हि त्वरया विहाय विविधान् अवद्यानध्वनः कल्मषान्, भूयो वैदिकमार्गानुररीकुरुत। स एव सारभूतः सत्यो देवयानो महान् पन्था। इन्द्रियाणां दमनेन साधुना चेतसा चिन्तयत जन्ममरणापवर्गाय जीवनवैशद्याय वैदिकसंस्कृतिसम्पदम् अविरामोन्नतिपरां कापटिकजनजालनिर्मलगुर्वीम्। एष एव मार्गः सच्चिदानन्दस्वरूपस्य प्रभोः सम्मेलनाय सांसारिक कष्टकलापापहाराय परमशान्तेरुपलब्ध्ये च।

पश्य देवस्य काव्यं न ममार न जीर्यति

भगवती श्रुतिः स्वयं वैदिकसाहित्यस्य संस्तवं कुरुते। ऋग्यजुस्सामाथर्वरूपं देवस्य परमात्मनः काव्यं कवित्वरूपं सार्वकालिकम्, यत्कदापि न जीर्णं भवित, न च म्रियते। एतत्काव्याध्ययनाध्यापनाभ्यामेव परमां शाश्वतिकी च शांति यूयं यास्यथ। अयमेव सुखावहो दुःखापहाश्च मार्गः

नान्यः पन्था विद्यतेऽयनाय

भगवदाराधनं हि जीवनस्य परमं महत्त्वम्। यदि जगति विविधानि अनीकानि विजित्य विविधान् अरीन् संमर्द्य, धन-धान्य विविधालङ्कारसम्भारभूतिं भव्यभावनायोगान् आसाद्य प्रचुरां मेदिनीं च विजित्य तादृशमानन्दम् उपलब्धासि सर्वमिदं क्षणिकं विनाशि च सुखम्। यद्येषु तथ्यं सुखमभविष्यत् तर्हि कथं धनधान्य पूर्णजीवनाः जना आरण्यकाः संजाताः। सकलान् सांसारिकरागान् सांसारिक जनदृष्टौ सुखागारान् विहाय कथ मुनित्वमापन्नाः। कथं जनकादयो राजर्षयः स्वीयां समृद्धां राज्यसमृद्धिं परिहाय विपिनवासिनोऽभूवन्। 'नाल्पे सुखमस्ति भूम्नि सुखम्।' यो वै भूमा तत् सुखम्।' 'भूमा वै परमैश्वरः।

यजुंषि प्रतिपादितम्

– भारतोदय से साभार

पंजीयन संख्या DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/2021-23
Licence to Post without prepayment of Postage. U (c)-289/2021-23

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य युवा सन्यासी व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें www-facebook-com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें व अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।

ई–मेल : aryavesh@gmail.com
Tel. :-011-23274771

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

पूर्व सांसद (राज्यसभा) श्री रामजी लाल आर्य का आकस्मिक निधन

श्री रामजी लाल आर्य पूर्व सांसद (राज्यसभा) का कई दिनों से अस्वस्थता के कारण उपचाराधीन होने के पश्चात 89 वर्ष की आयु में आकस्मिक निधन हो गया है। श्री रामजी लाल आर्य का जीवन बहुत ही सात्विक एवं प्रेरणादायक था, वह आर्य समाज की गतिविधियों के लिए सदैव सकारात्मक सहयोग देते रहते थे। उनका जन्म ग्राम आर्यनगर, जिला–हिसार में हुआ था। वह युवावस्था से ही आर्य समाज संगठन से जुड़े और जीवनभर समाजसेवा के रूप में समाज के कमजोर वर्ग के लोगों के लिए अपने कार्यों के माध्यम से महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते रहे।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने श्री राम जी लाल आर्य के निधन पर अपने श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए कहा कि श्री रामजी लाल आर्य के निधन से मुझे व्यक्तिगत रूप से गहरा आघात लगा है। मेरे प्रति उनका गहरा स्नेह था। हिसार जिले के किसी भी आर्य समाज के कार्यक्रम में जब वह मिलते थे तो वह अपना स्नेह और आशीर्वाद हमें सदैव देते रहते थे। विविध सामाजिक मुद्दों विशेषकर नशाबन्दी, धार्मिक अन्धविश्वास आदि पर गहन चर्चा उनके साथ होती रहती थी और

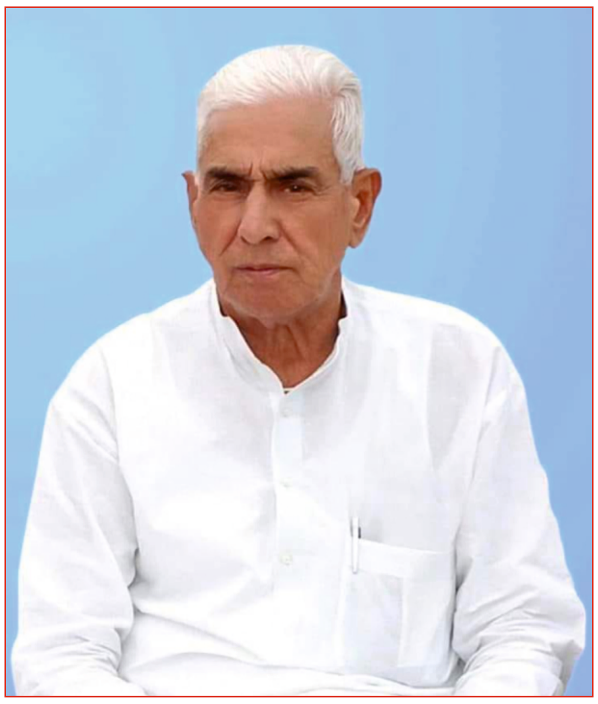

इस दिशा में कार्य करने के लिए वह सदैव हमें उत्साहित करते रहते थे। अपने गांव का नाम आर्यनगर रखवाने में भी उनकी विशेष भूमिका रही। गाँव में भव्य आर्य समाज का भवन भी उनके सहयोग से बना हुआ है जहाँ प्रतिवर्ष उत्सव एवं कार्यक्रम होते रहते हैं। श्री रामजी लाल अपने पीछे भरा पूरा परिवार छोड़कर गये हैं। उनके बड़े सुपुत्र श्री सुभाष शर्मा व छोटे सुपुत्र व्यवसाय के कार्य में संलग्न हैं तथा उनके भतीजे श्री चन्द्र प्रकाश आई.ए.एस. कमिश्नर पद पर हरियाणा सरकार में सेवारत हैं। उनका पूरा परिवार हर दृष्टि से सक्षम एवं प्रतिष्ठित है। ऐसे लोकप्रिय समाजसेवी वयोवृद्ध नेता का अचानक निधन आर्य समाज संगठन एवं राष्ट्र की अपूर्णीय क्षति है। परन्तु परमात्मा के नियम के सामने हम सब लोगों को नतमस्तक होने के अतिरिक्त और कोई विकल्प नहीं है।

स्वामी आर्यवेश जी ने समस्त आर्य जगत् तथा सार्वदेशिक सभा की ओर से स्व. श्री रामजी लाल आर्य के निधन पर गहरा दुःख प्रकट करते हुए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना की, कि उनकी आत्मा को शांति एवं सद्गति प्रदान करें तथा शोक संतप्त परिवार एवं उनके शुभ चिन्तकों को इस असह्य कष्ट को सहन करने की शक्ति दें। ●

।।ओ३म्।।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा
25 हजार वेद सैट प्रकाशित करने की महत्त्वाकांक्षी योजना

घर–घर तक पहुँचाई जायेगी परमात्मा की वेद वाणी

चारों वेदों का सम्पूर्ण हिन्दी भाष्य

भारी छूट पर उपलब्ध

(महर्षि दयानन्द, तुलसीराम स्वामी एवं पं. क्षेमकरण दास कृत)

(10 खण्ड, 9 जिल्दों में)

मात्र 3100/– में

एक वेद सैट मात्र 3100/– रुपये में उपलब्ध है।

10 अथवा उससे अधिक वेद सैट लेने पर लागत मूल्य में 30 प्रतिशत की छूट दी जायेगी

प्रत्येक आर्य समाज, स्कूलों के पुस्तकालयों, वाचनालयों तथा प्रत्येक घर में परमात्मा की वाणी वेदों का होना आवश्यक है। अधिक से अधिक संख्या में अग्रिम आदेश भेजकर भारी छूट का लाभ उठायें। डाक व्यय 300/– रुपये अलग से देना होगा। प्रारम्भिक स्तर पर 25 हजार वेद सैट प्रकाशित करने की योजना क्रियान्वित की जायेगी।

अपना आदेश **'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा'** के नाम चैक/बैंक ड्राफ्ट द्वारा "दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–2 के पते पर अग्रिम भेजकर अपना वेदों का सैट बुक करा सकते हैं।

–: प्रकाशक :–

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, "दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002 ● दूरभाष :– 011–23274771

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)

सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com

वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।